कलीसिया अध्याय 34

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **इब्रानियों 4-7**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (इब्रानियों 4-7) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* **(14) यूहन्ना 14:6**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(14) यूहन्ना 14:6। मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 15:1-27**

परिचय। **यूहन्ना 15:1-27** का एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए पाचं चरण के तरीके का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 14-17 में यीशु की प्रार्थनाएं और प्रभु भोज पर उसके साथ होने वाली घटनाएं शामिल हैं। यूहन्ना 15 में, *यीशु ने* अपने चेलों को शिष्यता के विषय पर *प्रोत्साहित किया।* एक शिष्य की विशेषताएं हैं: मसीह में लगातार बने रहना, परमेश्वर के वचनों को अधिकाई से लगातार अपने में बसने देना, प्रार्थना करना, एक दूसरे से प्रेम करना, उसकी आज्ञाओं को सुनना और संसार में जाकर फल लाना और संसार भर में उसके गवाह बनना।

दाखलता और उसकी फलदायी डालियों **के रूपक।** यीशु के सताये जाने और उसके क्रूसीकरण से कुछ समय पहले ही उसने अपने चेलों से विश्वास में मजबूत बने रहने और फल लाने का आग्रह किया! इस्राएल में "दाखलता" अपने आप में फलदायी होने का एक प्रतीक है (भजन 80:9-16; यशायाह 5:1-7; यिर्मयाह 2:21; यहेजकेल 17:1-10; योएल 2:22; जर्कयाह 8:12; मलाकी 3:11)।

यीशु ने अपने चेलों के साथ अन्तिम फसह के भोज के दौरान प्रभु भोज की शुरूआत की और बहुत स्पष्ट रूप से दाख के फल के बारे में बताया (मत्ती 26:26-30, मरकुस 14:22-26; लूका 22:14-20)। अत: यह सम्भव है कि यीशु ने उन्हें दाखलता व उसकी डालियों के बारे में शिक्षा या निर्देश प्रभु भोज की संस्थापना को मन में रखते हुए दी हो। यीशु चाहते थे कि उसके चेले उस प्रभु भोज में इस्तेमाल किये गये प्रतीकों से आगे देख सकें: अर्थात रोटी का तोड़ा जाना और दाखरस का पिया जाना, और वास्तविकता को समझे: अर्थात यीशु मसीह में बने रहना और फल लाने वाली डालियां बनना।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 15:1-27 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

15:4

खोज 1. **प्रत्येक मसीही के तीन महत्वपूर्ण कर्तव्य।**

यीशु ने तीन आज्ञाओं को इस्तेमाल किया: "मुझमें बने रहो" और "एक दूसरे से प्रेम करो" और "तुम्हें उसका साक्षी बनाना चाहिए"। ये तीन आज्ञाएं अध्याय 15 को तीन भागों में बांटती हैं और उन तीन महत्वपूर्ण बातों को सिखाती हैं जो हर एक विश्वासी कर सकता है:

- मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाना
- एक दूसरे के साथ प्रेम-व्यवहार को बनाये रखना
- सारे संसार में मसीह के साक्षी बनना।

(1) यूहन्ना 15:1-11। मसीह में बने रहें।

पद 4 में लिखा है, "मसीह में बने रहो" और 9 वचन में लिखा है कि, "मसीह के प्रेम में बने रहो"। लेकिन पद 5 कहता है, "मसीह हम में बना रहता है" और 7 पद बताता है "मसीह के वचन हम में बने रहते हैं"। मसीह मेरे लिए प्रेम में बने रहना सम्भव बनाते हैं, क्योंकि वह स्वयं मुझमें बने रहते हैं और उसका वचन मुझमें। लेकिन वह *पहले* मुझसे बात करना और अपने मुझ पर अपने प्रेम को प्रगट करना चाहता है, इसलिए मेरी यह जिम्मेदारी है कि मैं उसके साथ अपना व्यक्तिगत रिश्ता बना कर रखूं और उसके वचनों और उसके प्रेम का आदर करूं।

(2) यूहन्ना 15:12-17। एक दूसरे से प्रेम करो।

पद 13 में लिखा है कि "दूसरों से प्रेम करने" का अर्थ हर एक दिन दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करना है। इस अर्थ दूसरों पर अपना समय खर्च करना, प्रयास करना और अपनी सम्पत्ति को दूसरे के लिए इस्तेमाल करना ताकि वे मेरे द्वारा परमेश्वर के प्रेम का अनुभव कर सकें। ये दो आज्ञाएं कभी अलग नहीं की जा सकती। पद 10 में लिखा है कि यदि मैं उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ,, तो मैं उसके प्रेम में बना रहता हूँ। पद 14 में लिखा है कि यदि मैं वास्तव में मसीही की आज्ञाओं का पालन करता हूँ, तो मैं सच में उसका मित्र हूँ। इस अनुच्छेद से मैंने जो सबक सीखा है वह यह है कि मसीह से मेरा सम्बन्ध और मसीही भाई बहनों से मेरे सम्बन्ध को कभी अलग नहीं किया जा सकता। मसीह को प्रेम करने का अर्थ मेरे भाई बहनों को प्रेम करना है। और अगर मैं अपने भाई बहनों को प्रेम नहीं करता हूँ तो इसका अर्थ है कि मुझे मसीह से भी प्रेम नहीं है। "मसीह के प्रेम में बने रहना" और "एक दूसरे को प्रेम करना" दोनों अखण्ड हैं!

(3) यूहन्ना 15:18-27। मसीह के साक्षी बनें।

यीशु स्पष्ट रूप से अपने चेलों को आदेश दे रहे हैं कि वे संसार भर में जाकर उसकी गवाही दें। चेले ऐसा कर सकते थे, क्योंकि वे मसीह के ज़मीनी जीवनकाल में उसके साथ थे और क्योंकि पवित्र आत्मा उनके भीतर वास करने वाला था। ठीक इसी प्रकार से, पवित्र आत्मा मसीहियों को इस्तेमाल करके लोगों को गवाही देगा कि मसीह कौन है, उसने क्या किया, और लोग उसके साथ किस प्रकार एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बना कर उद्धार पा सकते हैं।

15:5

खोज 2. **स्वीकार करना कि यीशु मसीह के बिना एक मसीही कुछ भी नहीं कर सकता है।**

यह कहता है, "जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" मैं परमेश्वर के लिए फल लाने वाला जन बनना चाहता हूँ। यह वचन मुझे बताता है कि यह केवल तब ही सम्भव हो सकता है जब मैं उसमें बना रहूं और वह मुझ में। सच्चाई तो यह है कि बिना यीशु मसीह के मैं कुछ भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिसका प्रभाव अनन्त तक बना रहे।

कई बार यह सत्य मुझे डरा देता है क्योंकि मैं एक अति सक्रिय मसीही हूँ। अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूँ, क्या मेरे सारे काम परमेश्वर की अनन्ता के लिए फल उत्पन्न करते हैं। मैं एक दिन अपने बारे में यह नहीं सुनना चाहता कि मैं जीवन भर परमेश्वर के कामों के लिए सक्रिय रहा, लेकिन मैंने परमेश्वर के लिए कोई उत्पन्न नहीं किया।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 15:1-27 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

15:1

प्रश्न 1. **यूहन्ना 15:1-17 क्या है? क्या यह एक खरी शिक्षा है? क्या यह एक दृष्टान्त है? या फिर यह एक लाक्षणिक खण्ड है?**

ध्यान दें।

एक खरी शिक्षा। बाइबल में खरी शिक्षा का एक उदारहण यूहन्ना 14:15-27 है। एक दृष्टान्त का उदाहरण लूका 10:30-35 है। और बाइबल में एक का उदाहरण यूहन्ना 10:1-16 और यूहन्ना 15:1-17 है।

एक दृष्टान्त में केवल एक ही मुख्य अनुच्छेद होता है। उदारहण के लिए, भले सामरी के दृष्टान्त में,प्रश्न यह नहीं है कि "मेरा पड़ोसी कौन है?" वरन "मैं किसके लिए एक पड़ोसी के समान हूँ?" और उसका मुख्य संदेश है: "आप जिस पर दया प्रगट करते हैं उसी के पड़ोसी हैं।"

एक रूपक विभिन्न बिन्दुओं पर एक *विस्तृत तुलना* होती है। उदाहरण के लिए, इस तुलनात्मक खण्ड में "किसान" परमेश्वर को दर्शाता है, "दाखलता" यीशु मसीह को दर्शाती है, और "जिन दाखलताओं का यीशु मसीह के साथ जीवित समबन्ध होता है वे फल लाती हैं।" वे सच्चे मसीहियों को दर्शाती हैं। "जिन डालियों का यीशु मसीह के साथ जीवित या घनिष्ट सम्बन्ध नहीं होता वे कोई फल नहीं लातीं" जो नामधारी मसीहियों या गैर मसीहियों को प्रगट करती हैं। सच्चें मसीही हमेशा फल लाते हैं। लेकिन गैर मसीही या नामधारी मसीही यीशु से जुड़े होने के बावजूद अर्थात वर्षों से किसी कलीसियाई संगठन से जुड़े होने के बावजूद कोई फल नहीं लाते। क्योंकि "दाखलता" और "डालियां" लोगों को प्रदर्शित करती हैं, वे सबसे पहले तो नया जन्म पाये हुए लोगों, परिपक्व और सक्रिय मसीहियों और प्रभावशाली लोगों को दर्शाती हैं।

रूपक यह नही बताता है कि यीशु मसीह अंगूर से लदी हुई डालियों के साथ दाखलता है। यह तुलना दर्शाती है कि यीशु और लोगों के सम्बन्ध की तुलना दाखलता और उसकी डालियों और उसके फलों से की जा सकती है। हमें तुलना करते समय हर एक प्रतीक को अलग अर्थ के साथ प्रगट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

15:2 फल के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 2. **हम किसान द्वारा क्रूरता के साथ डालियों के काटे जाने का अभिप्राय समझाते हैं?**

ध्यान दें। किसान परमेश्वर पिता का दर्शाता है। पद 2 में वह डालियों (विश्वासियों को) को छांटता है। वह पुराने स्वभाव और बुरी आदतों को काटता है, ताकि विश्वासी गण ज्यादा फल ला सकें। वह छटांई वर्तमान काल में "शुद्धिकरण" को प्रगट करती है।

लेकिन पद 6 में वह उन डालियों को काटता है जिनसे कभी कोई फल उत्पन्न नहीं हुआ (गैर-मसीही, नामधारी मसीही) और उन्हें जलाने के लिए भटटी में डाल देता है। 6 पद में काटा जाना यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर होने वाले अन्तिम न्याय को दर्शाता है(मत्ती 3:10,12)

15:2

प्रश्न 3. **"फल" का वह कैसा स्वभाव है जिसे हम मसीहियों को धारण करना चाहिए?**

ध्यान दें। बाइबल में "फल" के बहुत अलग अलग मायने हैं।

- कुलुस्सियों 1:6 में सुसमाचार प्रचार करने वालों के द्वारा उत्पन्न किये गये फल नये विश्वासियों को दर्शाते हैं।
- यूहन्ना 15:16 में "बने रहने वाला फल" उन लोगों के द्वारा पैदा होते हैं जो उनकी परिपक्व और सक्रिय मसीही बनने तथा पुरानी जीवन शैली में फिर से वापस जाने से बचाने में मदद करते हैं, जो नये मसीही शिष्यों को दर्शाते हैं।
- लूका 3:8 में "पश्चाताप के संदर्भ में फल" भले कामों, अर्थात सच्चे पश्चाताप के फल को प्रदर्शित करते हैं।
- गलातियों 5:22-23 "आत्मा के फल" उस मसीही चरित्र को दर्शाते हैं जो पवित्र आत्मा मसीहियों में उत्पन्न करता है।

15:4

प्रश्न 4. फल लाने वाले लोग कौन हैं?

ध्यान दें। यूहन्ना 15:4 में लिखा है, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। फल लाने वाले वे लोग हैं जो यीशु मसीह के करीब आते, उसे अपने जीवन और अपने हृदय में स्वीकार करते और लगातार उससे बातचीत करते रहते हैं। मसीह के उनमें बने रहने के कारण, वे सावधान,प्रयत्नशील और फल लाने के लिए दृढ़ रहते हैं।

15:5

प्रश्न 5. विश्वासयोग्यता का क्या स्तर होना चाहिए?

ध्यान दें।

मसीहियों से *बहुतायत का फल* लाने की अपेक्षा की जाती है (15:5,8)। इसी कारण से परमेश्वर उन्हें छांटता है (यूहन्ना 15:2)। छांटना डांटने, सुधारने, अनुशासित करने और कठिनाईयों के द्वारा आकार देने को दर्शाता है। मसीहियों से *बने रहने वाले फल* लाने की भी अपेक्षा की जाती है (यूहन्ना 15:16)। इसलिए वे नये मसीहियों को मसीह का चेला (परिपक्व, सक्रिय और दृढ़) बनने में सहायता करते हैं (मत्ती 20:19-20)। वे उन्हें पुरानी जीवन शैली में फिर से वापस जाने से बचाने में उनकी मदद करते हैं।

कुछ मसीही लोग 100 गुना, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना फल लाते है (मत्ती 13:23)। कुछ मसीहियों के दूसरों की तुलना में ज्यादा फल लाने के पीछे निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

- कुछ मसीही परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देने में ज्यादा धीरजवन्त, भरोसेमन्द, वफादार और प्रयत्नशील, साहसी और नम्र होते हैं।
- दूसरे मसीही अन्यों की तुलना में सुसमाचार प्रचार करने तथा चेला बनाने में ज्यादा माहिर होते हैं।
- या परमेश्वर ने उन्हें अलग व्यक्तित्व, अलग आत्मिक वरदान और अलग परिस्थितियां प्रदान की होती हैं। जिसका दाता और न्यायी दोनों ही केवल परमेश्वर होता है।

15:6

प्रश्न 6. **फल न लाने वाले लोग कौन होते हैं?**

ध्यान दें। यूहन्ना 15:1-17 में एक एलर्जी दी गयी है, जो अपने आप में एक विस्तृत तुलना है। इसमें ऐसा नहीं कहा गया है कि यीशु मसीह एक अगूंरों से लदी डालियों वाली दाखलता है। इसका अर्थ है कि यीशु मसीह और लोगों के जीवन के बीच किसी भी क्षण के सम्बन्ध की दाखलता और उसकी डालियों से की जा सकती है। लेकिन हमें हर एक चिन्ह की व्याख्या करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जो डालियां फल लाती हैं वे सच्चे विश्वासी हैं।

लेकिन, जो डालियां फल नहीं लातीं वे उन लोगों को नहीं दर्शातीं जो पहले तो नया जन्म पाये हुए थे और फिर वे मसीही विश्वास से दूर हो गये। तुलना स्पष्ट तौर पर सिखाती है कि जिन डालियों को काटकर आग में डाला जाता है, वे उन लोगों को दर्शाती हैं जो अपने जीवन में कभी फल नहीं लाएं, तब भी नहीं जब उनका रिश्ता मसीह के साथ करीबी था। वे कभी भी सच्चे मसीही नहीं थे (नया जन्म पाए) और उनका "मसीह के साथ सम्बन्ध" नज़दीक होने पर भी सिर्फ एक दिखावा था। निष्कर्ष यह हुआ कि यह रूपक हमें यह नहीं सिखाता है कि नया जीवन पाया हुआ मसीही अपना उद्धार फिर से खो सकता है।

रूपक हमें सिखाता है कि नामधारी मसीही सच्चे मसीहियों के साथ एक ही कलीसिया में रह सका है (मत्ती 13:24-30,36-43), लेकिन सच्चा मसीही तो फल उत्पन्न करता है जबकि नामधारी मसीही फलरहित ही रहता है। नामधारी मसीही मसीह के करीब तो आता है लेकिन उसे स्वीकार नहीं करता। मसीह के साथ उनका रिश्ता केवल दिखावटी, परम्परागत और सांस्कृतिक होता है। हो सकता है कि वे मसीही धर्म और गतिविधियों के भागी हों, लेकिन मसीह के उनके भीतर न रहने के कारण, वे अनन्त प्रभाव वाले फल नहीं लाते।

यीशु मसीह उसके साथ नज़दीकी रिश्ता बनाने वाले मसीहियों में से हर एक को जिम्मेदारी सौपते हैं: लेकिन यदि वह परमेश्वर के वचन और प्राप्त प्रकाश को अस्विकार कर देता है तो, परमेश्वर उस व्यक्ति के जीवन में आगे को कोई काम नहीं करते।

- पवित्र आत्मा उसके साथ वाद विवाद करता न रहेगा (उत्पत्ति 6:3)
- उसका विवेक उसे आगे को गर्म नहीं रखेगा (रोमियों 2:15; 1 तीमुथीयुस 1:19-20)
- उसका हृदय कठोर हो जाएगा (मत्ती 13:14-15)
- वह लगातार केवल ऊँट कटारे ही उत्पन्न करता है (इब्रानियों 4:7-8)
- अन्तत:, उसे नरक में डाल दिया जाएगा (मत्ती 3:10,12)।

15:7 मसीह में बने लोगों के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 7. **मसीह में बने रहने का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। यीशु ने कहा, "मुझ में बने रहो" (यूहन्ना 15:5) और "यदि मेरे वचन तुम में बने रहे..." (यूहन्ना 15:7)। मसीह में बने रहने का अर्थ मसीह के वचनों में बने रहना है। यीशु यह भी कहते हैं, "मेरे प्रेम में बने रहो, ... मेरी आज्ञाओं का पालन करो" (यूहन्ना 15:9-10)। यहां पर मसीह में बने रहने का अर्थ मसीह की आज्ञाओं को पालन करना है।

हालांकि मसीह अपने शब्दों को मसीहियों से बोलने और उन से प्रेम करने वालों में पहला है, लेकिन यह मसीहियों की *जिम्मेदारी* है कि वे उसके प्रेम और उसकी बातों या उपदेशों का सही रीति से प्रतिउत्तर दें। उसे मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने और मसीह की आज्ञाओं को मानने का प्रयास करते रहना चाहिए। मसीहियों को मसीह से अपने सारे मन सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करने का और मसीह की शिक्षाओं का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। यदि कोई जन ऐसा सोचे कि वह मसीही है और मसीह को न प्रेम करे और न ही उसकी आज्ञाओं का पालन करे, तो वह जल्द ही सूखी डाली बनने के खतरे में है जिसे जल्द ही तुच्छ जानकर आग में डाल दिया जाएगा।

15:3 परमेश्वर के वचनों से जुड़े प्रश्न।

***प्रश्न 8.* मसीहियों के जीवन में मसीह के वचनों का क्या काम है?**

ध्यान दें। मसीह का वचन मसीहियों को शुद्ध करता है। यूहन्न 15:3 के अनुसार, यीशु मसीह का वचन विश्वासियों को उनके पापों से शुद्ध करता है। इसका अर्थ है कि मसीसी लोग उसी घड़ी धर्मी ठहर जाते हैं, जब वे बाइबल से सहमत होकर यीशु मसीह पर तथा उद्धार के निमित्त उसके द्वारा किये गये कामों को पहली बार स्वीकार करते हैं।

15:7

***प्रश्न 9.* मसीह के वचनों के प्रति मसीही जन की क्या जिम्मेदारी है?**

ध्यान दें। मसीहियों की जिम्मेदारी यह है कि मसीह का कलाम उसके विवेक और विचारों, उसके लक्ष्यों और इच्छाओं, उसके स्वभाव और भावनाओं और उसकी बोलचाल व व्यवहार को प्रभावित व नियन्त्रित करता है।

मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वह बाइबल के साथ कुछ करे (अर्थात सुने, पढ़े, अध्ययन करे, मनन करे, स्मरण करे, इस्तेमाल करे और दूसरों को सिखाए)(यूहन्ना 8:31-32)

मसीहियों की जिम्मदारी होती है कि बाइबल उसमें कोई काम करे, अर्थात उसके जीवन में कोई बदलाव करे(अर्थात उसके विचारों, निर्णयों,लक्ष्यों, इच्छाओं, वचनों,कामों/व्यवहारों को)(यूहन्ना 15:7)

15:7 प्रार्थना के विषय में प्रश्न।

***प्रश्न 10.* मसीह के वचनों और प्रार्थना में क्या है?**

ध्यान दें। यूहन्ना 15:7 में हम पढ़ते हैं कि, "यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" जब कोई मसीही मसीह के वचनों को अपने मन, विचारों, उद्देश्यों और कामों को नियन्त्रित व प्रभावित करने देगा, तो उसकी प्रार्थनाएं जरूर प्रभावशाली होगी। वह कभी मसीह के वचनों के विरूद्ध कुछ नहीं मागेंगा इसलिए उसकी ज्यादातर प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा। प्रार्थना के सम्बन्ध में यह एक बड़ी प्रतिज्ञा है।

15:16

***प्रश्न 11.* प्रार्थना और फल लाने के बीच में क्या रिश्ता है?**

ध्यान दें। यूहन्ना 15:16 में हम पढ़ते हैं, "तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह

तुम्हें दे।" एक सच्चा मसीही फलों के लिए प्रार्थना करेगा और अपनी प्रार्थनाओं के अनुसार फल उत्पन्न भी करेगा। जब मसीह हम मसीहियों को संसार में जाकर फल लाने के लिए भेजता है, तो हम मसीहियों को महसूस हो जाता है कि हम यह काम केवल मसीह की शक्ति, ज्ञान और उसके प्रेम में ही यह काम कर सकते हैं। इसलिए हम मसीही लोग दूसरों के पास जाने की आज्ञा का पालन करने के लिए परमेश्वर से साहस, शक्ति और बुद्धि प्रेम के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि हम उन लोगों को अनन्त तक बने रहने वाले फल बनने में सहायता कर सकें। इसके अलावा मसीह प्रार्थना के सन्दर्भ में एक सुन्दर प्रतिज्ञा भी करता है कि, जब कोई मसीही बने रहने वाले फल के लिए प्रार्थना यीशु मसीह के नाम से करता है तो उसकी प्रार्थना के अनुसार उसे उत्तर मिल जाता है।

15:9,12 संगति से संबन्धित प्रश्न ।

प्रश्न 12. **मसीही किस प्रकार से एक दूसरे को प्रेम कर सकते हैं?**

ध्यान दें। यूहन्ना 15:1-11 में लिखा है, "मसीह और उसके प्रेम में बने रहो!" और पद 12-17 में लिखा है कि, "एक दूसरे को प्रेम करो!" इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि मसीही लोग एक दूसरे को केवल तभी प्रेम कर सकते हैं जब वे मसीह और उसके प्रेम में बने रहते हैं। मसीही लोग जब मसीह के साथ व्यक्तिगत रिश्ता बनाने का प्रयत्न ओर मसीही की शिक्षाओं नियमित तौर पर पालन करने का प्रयास करते हैं तो ही मसीह उन्हें एक दूसरे को प्रेम करने की योग्यता प्रदान करेगा। मरकुस 12:30 में मसीह, मसीहियों को परमेश्वर से प्रेम करने तथा अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करने की आज्ञा देता है। लेकिन रोमियों 5:5 में वह मसीहियों के हृदयों में यह प्रेम पवित्र आत्मा की सहायता से डालता है। जब परमेश्वर मसीहियों को आदेश देता है, तो वह उन्हें उन आदेशों का पालन करने की ताकत भी प्रदान करता है! वह प्रेम करने की आज्ञा देता हैं तो साथ साथ प्रेम करने के लिए प्रेम भी देता है!

15:13

प्रश्न 13. **पद 13 में बड़े प्रेम का क्या अभिप्राय है?**

ध्यान दें। यूहन्ना 15:12-13 में हम पढ़ते हैं, "मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।" सबसे बड़ा प्रेम वह प्रेम है जो अपने मित्रों के लिए अपने प्राण को देने के लिए भी तैयार हो जाए। इस महान या बढ़े प्रेम के दो पहलू हैं: हमारे पापों के लिए प्रायश्यित के रूप में उसकी मृत्यु अनोखी है और उसकी बराबरी किसी सूरत में नहीं की जा सकती है, लेकिन त्याग भावना के रूप में उसकी मृत्यु को देखते हुए हम भी ऐसा करने का प्रयास कर सकते हैं।

मसीह ने हमारे पापों के लिए क्रूस पर एक प्रायश्चित के रूप में अपनी जान दी। उसने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया, अर्थात उसने हमारे पापों को दण्ड चुका दिया और हमारे प्रति परमेश्वर के पवित्र क्रोध को शान्त कर दिया। इस तरह का "बड़ा प्रेम" कोई और नहीं कर सकता है। हम दूसरों के पापों के लिए कभी नहीं मर सकते हैं।

लेकिन इसके साथ साथ यह प्रेम नि:स्वार्थ प्रेम भी था, यह प्रेम त्यागपूर्ण प्रेम था, इस प्रेम ने हमें लाभ पहुंचाया और वह उत्तम इन्सान बनाया जो हम बन सकते थे! मसीहियों को नि:स्वार्थ प्रेम, त्यागपूर्ण प्रेम और

उस प्रेम के द्वारा एक दूसरे को प्रेम करना चाहिए जिससे वे परमेश्वर व मनुष्यों के लिए सबसे बेहतर जन बन सकें।

15:14 आज्ञाकारिता के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 14. **आज्ञाकारिता और प्रेम के बीच में क्या रिश्ता है?**

ध्यान दें। व्यवहारिक तौर पर मसीह, मसीह के प्रेम और मसीह के साथ मित्रता में बने रहने का एकमात्र तरीका उसके वचनों को पालन करना है। लेकिन हमारा आज्ञा मानना पहले नहीं आता है। "तुम ने मुझे नहीं चुना, वरन मैं ने तुम्हें चुना है (यूहन्ना 15:16)। मसीह ने पहले हम से प्रेम किया और हमारे लिए मरा। फिर मसीह ने किसी को सुसमाचार सुनाने के लिए हमारे पास भेजा। और जब हमने उस पर विश्वास किया, तब मसीह ने अपना पवित्र आत्मा और उसका प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेल दिया (रोमियों 5:5)। हमारे हृदयों में मसीह का प्रेम होने पर हम मसीही के वचन का पालन कर सकते हैं। लेकिन उसके वचनों का पालन करके, वह हमारे मनों में अपने प्रति अधिक प्रेम को उत्पन्न करता है (यूहन्ना 14:21,23) और इस तरह से अन्य और बेहतर प्रेम चक्र का प्रारम्भ हो जाता है। अत: हमारे हृदयों में उण्डेला गया मसीह का प्रेम हमें मसीह को अधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है। हमारी आज्ञाकारिता के कारण मसीह हमारे हृदयों में और ज्यादा प्रेम को उण्डेलता है। उसके लिए हमारा बड़ा प्रेम हमें उसकी आज्ञाओं को ज्यादा मानने के लिए प्रेरित करता है। और यह सिलसिला चलता रहता है।

15:18 संसार के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 15. **"संसार" कौन है?**

ध्यान दें। "संसार" शब्द की व्याख्या हो यूहन्ना 1:10 में देखें। "संसार" यहां पर शैतान का कार्य क्षेत्र,दुष्ट लोगों और सस्थानों (राजनैतिक, सैन्य, सामाजिक, न्यायिक, धार्मिक) जो यीशु मसीह और उसके राज्य का विरोध करते हैं।

प्रेरितों के प्रारम्भिक दिनों में इस बुरे "संसार" को उन यहूदियों और उनके धार्मिक व राजनैतिक नेताओं द्वारा दर्शाया गया है जो परमेश्वर की निन्दा की, जिन्होंने यीशु को मसीह मानने से इनकार किया और जिन्होंने मसीही कलीसियाओं को सताया। इसलिए यीशु ने कहा कि यह बुरा "संसार" मसीहियों को अराधनालयों (उनके एकत्र होने का स्थान) से बाहर निकाल देगें और उन्हें मार देगें(यूहन्ना 16:2)। लेकिन जल्द ही यह "संसार" धरती के सारे देशों में रहने वाले ऐसे लोगों का संग्रह होगा, जो यीशु का इनकार करते और मसीहीयों को सताते हैं

15:18

प्रश्न 16. **संसार मसीहियों कसे इतनी नफरत क्यों करता है?**

ध्यान दें। संसार मसीहियों से इसलिए इतनी नफरत करता है क्योंकि मसीही इस संसार में तो हैं (यूहन्ना 17:11) लेकिन इस संसार के नहीं है (यूहन्ना 17:14)। संसार मसीहियों को इसलिए नफरत करता है क्योंकि उसने पहले यीशु मसीह को भी नफरत की है! यीशु मसीह ने मसीहियों को संसार से बाहर निकालकर और अपने ज्योति के राज्य में प्रवेश करवाने के द्वारा चुना है (कुलुस्सियों 1:13)। मसीही अब ने बुरा करना चाहते, न बुराई को माफ करते और न ही बुराई को नज़रअन्दाज करते हैं। मसीही लोग अपने बुराईयो से पश्चाताप करते, बुराई के खिलाफ प्रचार करते, बुराई का पर्दाफाश करते और उसके (अन्याय) खिलाफ लड़ते हैं। और यह बुरा संसार उसकी बुराई का विरोध करने के कारण मसीहियों से नफरत करता है। संसार अपने पापों के कारण दोषी है, क्योंकि मसीह के वचनों और उसके कार्यों ने स्पष्ट तौर पर सच्चे

परमेश्वर, अर्थात बाइबल के परमेश्वर, और उसकी आज्ञाओं को प्रगट कर दिया है (यूहन्ना 15:22)। संसार के लोगों ने ज्योति को देखा और उसकी बातों को सुना परन्तु भी उनका हृदय कठोर बना रहा। इसलिए उनके पास उनके पापों और उनकी नफरत के लिए कोई बहाना नहीं बचा है। "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था कि आधीन हैं: इसलिए कि हर एक मुह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड योग्य ठहरे।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 15:1-27 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 15:1-27 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदारहण।

15:2। परमेश्वर की उलाहना और उसके सुझाव को अपने जीवन को शुद्ध बनाने और अधिक फलदायी होने के एक तरीके के रूप में ग्रहण करें।

15:5। हर एक दिन मसीह के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत रिश्ता बना कर रखें। वह आपको बहुतायत से फल लाने में मदद करेगा।

15:7। परमेश्वर के वचनों को अपने विचारों और व्यवहार, आपके स्वभाव और लक्ष्यों को प्रभावित करने और आपको बदलने के लिए अनुमति प्रदान करें।

15:9-10। मसीह के लिए सच्चा प्रेम आपको मसीह की शिक्षाओं और आज्ञाओं का पालन करने में सहायता करता है। और मसीह के प्रति आज्ञाकारिता मसीह के प्रति बड़ा प्रेम करने के लिए अगुवाई करती है। अत: मन लगाकर मसीह की आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा, आपका प्रेम बढ़ता चला जाए।

15:13। विचार करके देखे कि आप मसीह और धरती पर उसके लक्ष्यों के लिए अपन जीवन दे सकते हैं।

15:16। ध्यान रखें कि मसीह ने आपको चुना और आपको ठहराया है कि आप जाकर उसके लिए स्थिर फल लाएं।

15:21-23। अगर संसार आपसे नफरत करता है तो हैरान न हों, क्योंकि उसने परमेश्वर और मसीह और ज्योति और सत्य से भी नफरत की है।

2. यूहन्ना 15:1-27 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझ पर अनुग्रह करे कि मैं उसके साथ अधिक से अधिक व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकूं। मैं पर्याप्त मात्रा में रोज अपना समय वचन पढ़ने तथा इस बात पर मनन करने

में खर्च करना चाहता हूँ कि मैं कैसे उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह की आज्ञा पालन करना आपकी मसीह को अधिक प्रेम करने तथा उसके लिए अधिक फल लाने में मदद करेगा।

मैं प्रभु से उसके अनुग्रह के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ ताकि मैं उसके लिए अधिक फल और स्थिर फल ला सकूं। मसीह ने मुझे बचाया और मुझे अपनी दाखलता की एक डाली बनाया है। उसका जीवन पवित्र आत्मा की सहायता से मुझमें होकर बहता है और मेरी फल लाने में मदद करता है। मैं ज्यादा से ज्यादा फल लाना चाहता हूँ। मैं बने रहने वाला फल लाना चाहता हूँ। इसलिए मैं उसके वचनों को मानकर, प्रार्थना करके और उसकी अन्य सन्तानों को प्रेम करके मसीह के साथ अपना रिश्ता मज़बूत करते रहना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 15:1-27 **में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।** (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण। चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 15 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियों 8-10** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(15) यूहन्ना 15:5।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।